International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2025; 2(2): 51-54
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 22-04-2025
Accepted: 28-04-2025
Publish : 30-04-2025

श्वेता पाण्डेय
शोधार्थी, (संस्कृत विभाग),
डी.जी.पी.जी.कॉलेज,
कानपुर

प्रो. आशारानी पाण्डेय
शोधार्थी (संस्कृत विभाग),
डी.जी.पी.जी.कॉलेज,
कानपुर

Correspondence:
श्वेता पाण्डेय
शोधार्थी, (संस्कृत विभाग),
डी.जी.पी.जी.कॉलेज,
कानपुर

विश्वगुणादर्श चम्पू के आलोक में वेंकटगिरि (शेषाचल) : पौराणिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक-भौगोलिक अध्ययन

श्वेता पाण्डेय, प्रो. आशारानी पाण्डेय

सार (Abstract)

दक्षिण भारत का वेंकटगिरि अथवा शेषाचल क्षेत्र भारतीय धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह क्षेत्र न केवल वैष्णव भक्ति परम्परा का केन्द्र है, अपितु अपने पौराणिक आख्यानों, पर्वतीय भू-संरचना तथा ऐतिहासिक-राजनीतिक परिवर्तनों के कारण भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य महाकवि वेंकटाध्वरि कृत विश्वगुणादर्शचम्पू के आलोक में वेंकटगिरि के पौराणिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक स्वरूप का विश्लेषण करना है। इसमें वाराहपुराण, स्कन्दपुराण एवं भविष्योत्तरपुराण के सन्दर्भों के माध्यम से वेंकटाचल के विभिन्न नामों, युगानुसार महात्म्य तथा उसके ऐतिहासिक-भौगोलिक विकास को स्पष्ट किया गया है। साथ ही 17वीं शताब्दी की राजनीतिक परिस्थितियों और आधुनिक भौगोलिक-पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में इस क्षेत्र की वर्तमान स्थिति पर भी विचार किया गया है।

भूमिका

दक्षिण भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन में वेंकटगिरि एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थल के रूप में उभरता है। यह क्षेत्र अपने प्राकृतिक सौंदर्य, पर्वतीय संरचना तथा वैष्णव परम्परा से गहरे जुड़ाव के कारण प्राचीन काल से ही श्रद्धा का केन्द्र रहा है। महाकवि वेंकटाध्वरि ने विश्वगुणादर्श चम्पू में वेंकटगिरि का विशिष्ट वर्णन कर इसे केवल एक भौगोलिक इकाई न मानकर एक पवित्र सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

वाराह पुराण के अनुसार क्रीडापर्वत –

"नारायणगिरिम् नाम्ना क्रीडाद्रिं परमेष्ठिनः ।।
योजनत्रयविस्तारं त्रिंशद्योजनमायतम् ।
शेषाकारम् हरेःशेषं शोषिणं सर्वदेहिनाम् ।।
दिव्याकारम् महापुण्यम् पश्यताम् मोक्षदायकं ।
एवं रूपं गिरिश्रेष्ठं स्कंधदेशे निधाय तम् ।।
परिवारेरूपेतम् च भागवत्परिचारकैः।
आजगाम महावेगाद्गरुडः काञ्चनप्रभः ।। (श्रीवेंकटाचलमाहात्म्यम्, 2/16-19)

इसके पश्चात सभी देवतागणों ने भगवान् वाराह से इसी पर्वत पर निवास करने के लिए प्रार्थना किया। श्री वाराह पुराण में इसी क्रीडाचल पर्वत पर वाराह अवतार रुपी भगवान् विष्णु वेंकटेश्वर के रूप में श्रीदेवी और भूदेवी सहित प्रकट हुए और तब से ये पर्वत भी वेंकटाचल या वेंकटाद्रि के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

"बैकुण्ठात्परमो ह्येष वेंङ्कटाख्यो नगोत्तमः ।
अत्रैव निवसाम्येवं श्रीभूमिसहितो ह्यहम् ।।

.ददामि प्रार्थितानर्थान्मनुजेभ्यः सदा सुराः ।।

(श्रीवाराह पुराण, भाग-1, अध्याय-35, श्लोक संख्या- 12-13)

वेंकटाचल पर्वत को सतयुग में 'वृषशिखर' के नाम से प्रसिद्ध था। इस नाम की उत्पत्ति के प्रसंग का वर्णन भविष्योत्तर पुराण में वर्णित हुआ है। इसके अनुसार – कृतयुग (सतयुग) में वृषभासुर नामक राक्षस ने अनैतिक रूप से इस पर्वत (वेंकटाचल) को अपने अधीन कर के ऋषि-मुनियों को पीड़ित करने लगा। किन्तु उसने तुम्बूर तीर्थ में पाँच हजार वर्षो तक तपस्या किया। इस घोर तपस्या के समय वह प्रतिदिन उस तम्बूर तीर्थ के पवित्र जल में स्नान करता और भगवान श्रीनारायण के शालग्राम के समक्ष अपना शीश काटकर पुष्प की भांति अर्पित किया करता था। किन्तु शीश कटने के पश्चात् उसके शरीर पर पुनः नया सिर आ जाता था। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवन श्री नारायण ने उसकी इच्छा पूछी किन्तु उस राक्षस ने कोई वर नहीं माँगा। उसने नारायण के समक्ष युद्ध करने की इच्छा प्रकट की। भगवन ने उसकी कामना का मान रखा और दोनों के मध्य युद्ध आरम्भ हुआ जो बहुत समय तक चला। अंततः भगवन श्री विष्णु ने सुदर्शन चक्र के प्रयोग के लिए विवश होना पड़ा। यही वो वृषभासुर भी चाहता था क्योकि सुदर्शन चक्र से मरने वाले को परमगति प्राप्त होती है। परमगति सुनिश्चित होने के पश्चात उस असुर ने भगवन से विनती किया कि यह पर्वत उसके नाम से जाना जाए। भगवन ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और इस पर्वत का नाम वृषभाद्रि पड़ा। इस प्रकार सतयुग में यह वृषभाचल या वृषशिखर के नाम से व्यवहृत रहा है।

एवमुक्त्वा हरेः पादौपस्पर्श वृषभासुरः।
वरं ययाचे वृषभः शैलो मदभिधोऽस्त्विति ।।

(भविष्योत्तरपुराण 1/69)

समालिंग्य भवेदेवमित्युक्त्वा हरिणाथ सः।
विसृष्टचक्रसंच्छिन्नस्त्यक्तवान्स्वकलेवरम् ।।
तस्माद वृषभशैलोऽयं कृते ख्यातिमुपेयिवान।

(भविष्योत्तरपुराण- 1/70-71)

विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य में द्वापरयुगीन 'शेषशैल' इस नाम का वर्णन जिसका वर्णन भविष्योत्तर पुराण में हुआ है, इस पुराण के अनुसार –

"द्वापर युग में वायुदेव भगवान् नारायण के दर्शनार्थ बैकुण्ठ पहुँचे किन्तु उस समय भगवान् नारायण लक्ष्मी के साथ थे और द्वार पर रक्षक के रूप में स्वयं आदिशेष थे। उन्होंने वायुदेव को रोका जिसपर वायुदेव क्रुद्ध होगये और दोनों के मध्य द्वन्द युद्ध चला। दोनों अपने दर्प के कारण पराजय स्वीकार नहीं करना चाहते थे। ये सब देखकर भगवान् नारायण ने दोनों की परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने आदिशेष से कहा की तुम अपने बक से इस क्रीड़ापर्वत को कसकर पकड़ लो और वायुदेव से कहा कि आप अपने शक्ति के द्वारा इस पर्वत को मेरू पर्वत के उत्तर दिशा में उड़ाकर फ़ेंक दो। दोनों अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने लगे जिसके परिणामस्वरुप सृष्टि में उथल-पुथल होने लगा। तब सभी देवगण भगवान नारायण से रक्षा के लिए विनती करने लगे। तब शेषनाग भगवान विष्णु के भावो को समझकर अपने हजार फणों में से एक फण को ढीला कर दिया जिससे वायुदेव ने उस पर्वत को शेषनाग सहित दूर फेका किन्तु पर्वत आधी दूर अर्थात उत्तर की ओर स्वर्णमुखी नदी के पश्चिम किनारे स्थापित कर दिया। तब देवगणों ने वायुदेव को बताया की ये कार्य शेषनाग के कारण आप कर पाए है। इस पर वायुदेव को पश्चाताप हुआ और शेषनाग की स्तुति करने लगे। शेषनाग प्रसन्न हुए तत्पश्चात भगवान् नारायण के की आज्ञा से एक विशाल पर्वत बने जिसका विस्तार तीस योजन पर्यंत तक था। आदिशेष का फण वेंकटाद्रि बना जहाँ पर श्रीवेंकटेश्वर का वास बना। इस प्रकार द्वापर युग में यह पर्वतमाला शेषशैल, शेषाद्रि और शेषाचल नामों से विख्यात हुआ। "

"इत्थं शेषांशजं शैलम् शेषेण परिवेष्टितम् ।।
स्वावासहेतोर्हरिणा वाहितम् वायुना छलात्।
राजञ्छेषनिमित्तेन शेषाचलमिमं विन्दुः ।।

(भविष्योत्तरपुराण 1/137-138)

विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य में वेंकटगिरि (शेषशैल) का काव्यात्मक वर्णन

महाकवि वेंकटाध्वरि ने वेंकटगिरि को शेषशैलम, शेषाचलम, वृषशिखर आदि नामों का भी वर्णन किया है। किन्तु महाकवि वेंकटाध्वरि ने इसकी भौगोलिक स्थिति का स्पष्ट वर्णन तो नही किया है किन्तु जिस प्रकार से विश्वगुणादर्श चम्पू के मुख्य पात्र विश्ववसु और कृशानु विमान द्वारा आन्ध्रदेश और कर्णाटदेश की यात्रा करते हुए वेंकटगिरि का दर्शन करते है। उपरोक्त स्थान भारत के मानचित्र में दक्षिण दिशा में स्थित है तो पाठक ये अनुमान लगा लेते है कि वेंकटगिरि भी दक्षिण दिशा में स्थित है।

महाकवि वेंकटाध्वरि ने भी इस पर्वत को बैकुण्ठ से अधिक ऐशवर्य युक्त माना है तभी भगवान् विष्णु माता लक्ष्मी के साथ निवास करते है –

" बैकुण्ठेऽपि नीरुत्कण्ठमकुण्ठविभवं महः।
तदत्र चित्रचारित्रं रमते रमया समम् ।।"

(विश्वगुणादर्शचम्पू श्लोक संख्या-194)

महाकवि वेंकटाध्वरि ने विश्वगुणादर्श चम्पू में वेंकटगिरि के भिन्न भिन्न नामों का वर्णन करके उसकी विशेषताओं का उल्लेख किया है। महाकवि वेंकटाध्वरि ने वेंकटगिरि को 'शेषशैल' (शेषाचल) कहकर प्राकृतिक सौन्दर्य और आध्यामिकता के आश्रय स्थल के रूप में वर्णित किया है –

"सुरभितमतमालस्तोमपुष्पद्रसालप्रकरतिलकसालप्रेष्ठसुष्ठद्रुजालः।
श्रितसमवनशीलः श्रीशलीलानुकूलः शिथिलतभवमूलः सेव्यताम् शेषशैलः ।। "

(विश्वगुणादर्शचम्पू श्लोक संख्या- 191)

"पन्नेषु च नगेषु खगेषु द्वीपिराजसु दृषत्सु।
वल्लरीषु च दरीषु झरीषु प्रार्थयन्ति जनिमत्र मुनीन्द्राः ।। "

(विश्वगुणादर्शचम्पू श्लोक संख्या-192)

महाकवि वेकटाध्वरि ने शेषशैल की सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते है –

"प्रकाशबहुपादवत्यपि फणिक्षभाभृत्यदः
प्रकाममवलोक्यते परममन्यदत्यद्भुतम् ।
निजोरसि पयोधरश्चिरमचञ्चलां विद्युतं
पयोधरमुरस्यसावपि विभर्ति नित्यं नीजे ।।

(विश्वगुणादर्शचम्पू श्लोक संख्या 206)

महाकवि वेंकटाध्वरि ने 'वेंकटाचल' को सतयुगीन प्रचलित नाम 'वृषशिखर' के **नाम से वर्णन किया है –**

"विविधनिगमसारे विश्वरक्षैकधीरे
वृषशिखरिविहारे वक्षसाऽऽश्लिष्टदारे ।
भगवति यदुवीरे भक्तबुद्धेरदूरे
भवतु चिरमुदारे भावना निर्विकारे ।।

(विश्वगुणादर्शचम्पू श्लोक संख्या 193)

"अवलोक्यतावदुरगवरधरणीधरशिरोमणेश्चक्रच-
पाणेरतितरसुकरवरनिकरवितरणकौशलमतिपेशलम् ।। "

(विश्वगुणादर्शचम्पू गद्य-81)

महाकवि ने इस पर्वत को कुंडलीन्द्रभूधर और पन्नगन जैसे विशेषणों का प्रयोग करके इसके धार्मिक महत्व को स्पष्ट किया है ।

"प्रचंडविश्वकण्टकप्रखण्डनैकपंडितः
पतङ्गमण्डले वसन् य एष पाण्डवप्रियः ।
अकुण्ठरीतिकः प्रसन्नपुण्डरीकलोचनः
स कुण्डलीन्द्रभूधरप्रकाण्डमण्डनायते ।।

(विश्वगुणादर्शचम्पू श्लोक संख्या 203)

"दधति चिराय सुदीतिमुरःस्थले तदतीतसीम ददति सुखं सताम् ।
रसिकस्य चित्तमिह कस्य देवता प्रतिपन्नपन्नगनगा न गाहते ।।

(विश्वगुणादर्शचम्पू श्लोक संख्या 195)

संक्षेप में कहा जाये तो समस्त मानव जाति को इसी पर्वत पर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि प्राप्त होगी । यदि किसी मानव में तपस्या करने की शक्ति का आभाव भी होगा तब भी यह वेकटगिरि उन्हें आश्रय देकर मोक्ष प्राप्ति में सहायक होगा । वाराह पुराण में वर्णित है –

"अंगवै कल्पदोषाश्च न स्युः स्वामिसरस्तटे ।
वासवादिष्वमोघं च दृष्टं कर्माऽत्र दृश्यते ।। "
बहुनेह किमुक्तेन धर्मार्थादिफलेषु च ।
वाञ्छावतां मनुष्याणां स्त्रीशुद्राणां च पापिनाम् ।।

(वाराहपुराण 3/32-33)

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में -

"इन पर्वतमालाओ का निर्माण प्रीकैम्ब्रियन युग (लगभग 540 मिलियन वर्ष पूर्व) में निर्मित हुई थी । इन श्रेणीयों में बलुआ पत्थर और शैल है जो चुना पत्थर के साथ अंतर्भुक्त है और अत्यधिक विच्छेदित है, जिनमे कई अनुदैघ्र्य है । "

(www.britanica.com)

वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करने से पूर्व महाकवि के काल अर्थात 17वी० शताब्दी के भारत की भौगौलिक परिस्थिति को भी जानना आवश्यक है । 12वी० शताब्दी से लेकर 16वी० शताब्दी तक शेषाचलम या वेंकटगिरि भारतवर्ष दक्षिण के सबसे शक्तिशाली राज्य विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत आता था । इसकी सीमाएँ उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर दक्षिण में भरतीय प्रायद्वीप का सुदूर दक्षिणी सिरे तक था, पूर्व में बंगाल की खाड़ी से लेकर पश्चिम में अरब सागर तक था । वर्तमान का कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश,केरल, उड़ीसा ये विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत आते थे ।

किन्तु त्तालिकोट युद्ध (1565) के पश्चात विजयनगर का पतन आरम्भ होने लगा था और 17वी शताब्दी के उतरार्ध में गोलकुंडा के सुलतान ने तिरुपति पर अधिकार कर लिया । श्री साधू सुब्रह्मण्य शास्त्री के अनुसार **" तत्कालीन परिस्थियों से ज्ञात होता है कि उस समय गोलकोंडा के सुल्तान अब्दुल्ला कुत्ब शाह की मुस्लिम सेना ने कोहराम मचाया था । विजयनगर साम्राज्य के इस मध्य क्षेत्र सम्पूर्ण तिरूपति को आतंकित किया हुआ था और दुसरी ओर दक्षिण क्षेत्र में बीजापुर की सेनाएँ कहर बरपा रही थी । "**

(तिरूपति श्रीवेंकटेश्वर, पेज- 321)

१७वी शताब्दी के अंत में यह स्थान मुग़ल साम्राज्य का अंग बन गया ।

श्री साधू सुब्रह्मण्य शास्त्री के अनुसार,**" गोलकोंडा के एक वजीर 'मीरजूमला' ने इस क्षेत्र को विजित किया । जब वह औरंगजेब के साथ चला गया तो यह क्षेत्र मुग़ल साम्राज्य का अंग घोषित किया । १६५६ में औरंगजेब, दक्खिन का वायसराय बना और अपने पिता शाहजहाँ का प्रतिनिधि होकर दक्खिन में तैनात हुआ । "**

(तिरूपति श्रीवेंकटेश्वर- पेज 322)

आधुनिक भौगोलिक एवं पर्यावरणीय स्थिति

वर्तमान में ये स्थान भारतवर्ष का अत्यधिक ख्याति प्राप्त तीर्थ स्थान है जिसे तिरूमला-तिरुपति कहते है। इस पवित्र क्षेत्र का 13⁰67" उत्तरी अक्षांश और 79⁰58" पूर्व देशांतर पर स्थित है । श्री साधू सुब्रह्मण्य शास्त्री के अनुसार, **"ये पवित्र स्थान आजकल के आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर जिले की दक्षिणी छोर पर है । इस शहर के पास ही स्थित शैल शिखर पर भगवान् श्री वेंकटेश्वर स्वामी के अवतरित होने के कारण ही इस शहर का नाम 'तिरूपति' है । तिरुमल शैल शिखारमाला 'शेषाचल' नाम से विख्यात है । यह पहाड़ी प्रान्त 'कडपा' जिले में शेषाचल कहलाता है, वही कर्नूल जिले के उत्तरी प्रान्त में 'नाल्लमल' (काला पहाड़) । चित्तूर, कडपा और कर्नूल जिलों में व्याप्त तीनो पहाड़ियों का जोड़ पूर्वी घाटियों का आधा उत्तरी भाग है । इन पहाड़ी घाटियों का ऊपरी भाग अनेक पंक्तियों में बहु वलयों में और पर्वत श्रेणियों के रूप में तीन जिलों में व्याप्त है।"**

(तिरूपति श्रीवेंकटेश्वर- अध्याय 1 (आमुख)

श्री साधू सुब्रह्मण्य शास्त्री के अनुसार, **"तिरुपति का पहाड़ी तल बंगाल की खाड़ी तल से 2820 फुट की ऊँचाई पर है और उसका विस्तार क्षेत्र लगभग 100 वर्गमील में है। यह पहाड़ी विस्तार सात शृंखलाओ से युक्त है जो सर्पराज आदि शेष के सप्त फणों के रूप में मानी है। इनमे से पहले के चार लगभग सपाट और लगातार है जब कि पांचवा और छटवा गहरी और सघन गिरि-कंदराओ से युक्त है। इसे 'अवसारि' या 'अव्वाचारी' कोना कहते है। कोना का अर्थ "व्याँली" (घाटी) है। इन सप्त गिरियों को शेषाचल, वेदाचल, गरुडाचल, अन्जनाचल, वृषभाचल, नारायणचल और वेंकटाचल नामों से अभिहित है। "**

(तिरूपति श्रीवेंकटेश्वर- अध्याय 1 (आमुख)

शेषाचलम को बयोस्फीयर रिजर्व अर्थात शेषाचलम पहाड़ियाँ वन्यजीव अभ्यारण के नाम से जानी जाती है। जैवविविधता के कारण 1985 में इनके संरक्षण की आवश्यकता को समझते हुए भारत सरकार ने शेषाचलम वन्यजीव अभ्यारण की स्थापना की गयी। किन्तु 2010 में भारत सरकार ने शेषाचलम वन्यजीव अभ्यारण से बदलकर बायोस्फीयर रिजर्व कर दिया जिसका उद्देश्य सतत विकास को बढ़ावा देना, सास्कृतिक विरासत की रक्षा करना और क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना है।

संक्षेप में ये प्रयास प्रसंशनीय है किन्तु इसमें नागरिको का भी प्रयास की आवश्यकता है। आधुनिकीकरण कही ना कही इसकी प्राकृतिक संपदा को नष्ट कर रहा है। जलवायु परिवर्तन एक बहुत बड़ी समस्या है जिस पर विद्वत जनों को ठोस पूर्ण हल निकालना होगा।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –</u>

1. शास्त्री, श्री अनंतकृष्ण (सम्पादक), श्रीवेंकटाचलमाहात्म्यस्य (प्रथमो भागः) (वैशाख संवत 1986), कलकत्ता।
2. श्रीवाराह पुराण भाग-१
3. भविष्योत्तरपुराण, गीताप्रेस,
4. शास्त्री, प्रो० सुरेन्द्रनाथ, श्रीवेंकटाध्वरिप्रणीतः विश्वगुणादर्श-चम्पू (2017), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
5. शास्त्री, प्रो० सुरेन्द्रनाथ, श्रीवेंकटाध्वरिप्रणीतः विश्वगुणादर्श-चम्पू (2017), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 195।
6. www.britanica.com
7. शास्त्री, श्री साधू सुब्रह्मण्य (अंग्रेजी मूल)& राव, प्रो० यद्दनपूडि वेंकटरमण & शर्मा, प्रो० गोपाल (हिंदी अनुवाद) (2019), तिरूपति श्रीवेङ्कटेश्वर, तिरूमल तिरूपति देवस्थानम, तिरूपति, पेज- 321।
8. शास्त्री, श्री साधू सुब्रह्मण्य (अंग्रेजी मूल)& राव, प्रो० यद्दनपूडि वेंकटरमण & शर्मा, प्रो० गोपाल (हिंदी अनुवाद) (2019), तिरूपति श्रीवेङ्कटेश्वर, तिरूमल तिरूपति देवस्थानम, तिरूपति।